यति यतनलाल जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक वैयक्तिक अध्ययन

राजकुमार दास

सहायक प्राध्यापक
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)
ई मेल : rajkumardas99@gmail.com

भूमिका

अंग्रेज़ो की गुलामी के अंधकार से निकालने के लिए जिस तरह भारतवर्ष में देशव्यापी आन्दोलन चल रहे थे, छत्तीसगढ़ (तत्कालीन मध्यप्रदेश) भी इस आज़ादी की लड़ाई से अछूता नहीं था, देश की आज़ादी के लिए राष्ट्रीय स्तर पर जिस तरह कई नेता और विभिन्न क्षेत्रों के लोग आगे आए थे, उसी तरह छत्तीसगढ़ में भी आज़ादी की लड़ाई को सफल बनाने के लिए कई महान विभूतियों ने इसमें अपना योगदान दिया और अपने अथक प्रयासों से देश को दासता के चंगुल से छुड़ाया था। छत्तीसगढ़ के इन्हीं महान विभूतियों में से एक थे **"संत सेनानी : यति यतनलाल जी"** जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से एक संत की तरह देश के लिए जीवनपर्यंत कार्य किया। प्रस्तुत शोधकार्य साहित्य अवलोकन और साक्षात्कार पर आधारित उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का एक अध्ययन है।

अध्ययन की प्रासंगिकता

यति यतनलाल जी ने अपने समय में देश प्रेम, खादी के प्रयोग, अहिंसा प्रचार,पशुओं व मानवमात्र की सेवा के साथ-साथ अनेक प्रकार के देशहितकारी कार्यों को मूर्त रूप दिया तथा जीवन भर एक यति का जीवन गुजारा, आप छत्तीसगढ़ के सबसे प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानियों में गिने जाते हैं यद्यपि कुछ एक साहित्यों को छोडकर आपके योगदान का उल्लेख कहीं अन्यत्र नहीं मिलता जबकि छत्तीसगढ़ शासन पिछले 15 वर्षों से आपके नाम पर गो-रक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वालों को पुरस्कार देती आ रही है। इस अभिप्राय से छत्तीसगढ़ की ऐसी महान विभूति के व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोधकार्य करना और भी प्रासंगिक हो जाता है।

जीवन परिचय

जन्म : सन 1894

देहावसान : 4 अगस्त 1976 ई.

देश के स्वतन्त्रता आंदोलन में महासमुंद क्षेत्र से महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले बहुआयामी व बहुविलक्षण व्यक्तित्व से विभूषित स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शांति मूर्ति छत्तीसगढ़ के महान विभूति यति यतनलाल जी का जन्म सन 1894 में राजस्थान के बीकानेर शहर में हुआ। इनके जन्म के बारे में जैन धर्म के महान संत विवेकवर्धन जी को पता चला, विवेकवर्धन जी शिशु के तेजस्वी मुखमंडल को देखते ही समझ गए की इस शिशु के माध्यम से किसी तेजस्वी आत्मा ने जन्म लिया है अतः उन्होने तत्काल ही इस शिशु के पालन-पोषण का दायित्व ले लिया और माता के द्वारा छह माह की अल्पायु में ही सौंपने के उपरांत शिशु को लेकर रायपुर आ गए, गुरु के सान्निध्य में बालक ने अनेक धर्मों, ग्रन्थों और शास्त्रों का अध्ययन किया। आगे चलकर स्वाध्याय के माध्यम से ही आपने गणित, संस्कृत और इतिहास का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया, 19 वर्ष की आयु में पूज्य गणी जी ने उन्हें दीक्षा दी उस दिन से वे यतनलाल के नाम से जाने जाने लगे ।

राजनैतिक जीवन

महासमुंद को अपनी कर्मभूमि के रूप में अपनाने वाले यति यतनलाल जी अंग्रेजों के द्वारा जालियावाला बाग में किए गए भीषण अत्याचार का समाचार सुनकर स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े । भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात 1957 तक पं. रविशंकर शुक्ल के अनन्य सहयोगी के रूप में आप राजनीति में सक्रिय रहे । काँग्रेस और उनके आदर्शों को यति जी ने धर्म की तरह स्वीकार किया , सन 1921 में यति जी ने कॉंग्रेस मैं प्रवेश किया , 1922 के मई माह में रायपुर राजनीतिक परिषद का आयोजन और पंडाल में जिलाधीश तथा पुलिस को न घुशने दें की घटना में जब शुक्ल जी गिरफ्तार कर लिए गए तो इसका घोर विरोध प्रदर्शन हुआ इसमें यति जी भी शामिल थे। 1922 में श्री वामनराव लखे जिला काँग्रेस के सभापति थे, इसमें यति जी को उपसभापति बनाया गया, बाद में 1925 में वे जिला काँग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए, तब से वे 1960 तक जिला काँग्रेस कमेटी के प्रबंध समिति में रहे ।

पहली बार पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की मांग करने वालों में यति जी का नाम भी प्रमुखता से लिया जाता है । एक मार्च को महात्मा गांधी ने जब दांडी सत्याग्रह किया तो भारत के कोने-कोने में सत्याग्रह की हलचल मच गयी, रायपुर में भी नमक बनाकर कानून तोड़ा गया, स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान सन 1930 में जंगल सत्याग्रह, सन 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन और सन 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें 6 माह की अवधि के लिए जेल भेज दिया गया ।

अमरावती जेल में सैद्धांतिक आधार पर ब्रिटिश हुकूमत का आदेश न मानने पर अंग्रेज़ अधिकारियों ने उन्हें 6 दिनों तक पीने का पानी नहीं दिया, पर यति जी अपने सिद्धांतों पर अड़े रहे अंततः अंग्रेज़ अधिकारियों को ही झुकना पड़ा।

आज़ादी के बाद भी अनेक बार उन्हें संसद की सदस्यता का प्रलोभन दिया गया परन्तु उन्होंने इसे विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। यति जी ने स्वाधीनता संग्राम सेनानियों को मिलने वाली राशि को भी अस्वीकार कर दिया था। 10-09-1972 को 'श्री क्रांतिकुमार भारतीय' को एक चिट्ठी लिखकर उन्होंने अपनी भावनाएं कुछ इन शब्दों में व्यक्त की थी : उन्होंने लिखा कि "मैंने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया, इसलिए मुझे खुशी है परम आनंद है। भारत स्वतन्त्र हुआ, यही मेरा सबसे बड़ा सम्मान है। मैं स्वतन्त्र देश का नागरिक बन गया इसमें ही प्रसन्नता है"। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात व शुक्ल जी के निधन के पश्चात राजनीति से सन्यास लेकर यति यतनलाल जी आध्यात्मिक चिंतन में पूर्ण रूप से लीन हो गए॥

सामाजिक जीवन

सेवा भावना : मानव सेवा हेतु यति जी सदैव तत्पर रहते, इसका प्रमाण उनके द्वारा 1934 के हैजा प्रकोपित मरीजों की सेवा सुश्रुषा के एक उदाहरण से मिलता है। पं. रविशंकर शुक्ल द्वारा स्थापित रायपुर ग्राम्य सेवा संघ के अंतर्गत यति जी को ग्राम बंगोली केंद्र में प्रधान नियुक्त किया गया था। जहां उन्होंने जान पर खेलकर ऐसे मरीजों की सेवा की जिन्हें छोडकर स्वयं उनके परिजन भी पलायन कर गए थे। हैजे की वीभत्स स्थिति का विवरण देते हुए यति जी ने 20 सितंबर 1934 को पं.रविशंकर शुक्ल जी को पत्र में लिखा की "देहात की हालत हम लोगों ने देखी है जबकि हैजे (धुकी दाई) का चारों ओर दौरा-दौरा था। जिस गाँव में हैजा शुरू हुआ वहाँ के लोग घर से बाहर निकलना महापाप समझते हैं। जहां बीमार हैं वहाँ की जगह तो साक्षात नरक है, यदि भाग्य से डॉक्टर पहुँच जाए तो उसके पास टीका लगवाना भी पाप समझते हैं, गाँव में जहां बीमारी शुरू हुई कि न किसी को आने देते हैं और न जाने देते, चौकी पर पहरा लग जाता है। विशेषकर स्त्रियों की बड़ी दुर्दशा होती है"।

परोपकारी

परोपकार से परीपूर्ण यति जी सहकारी आंदोलन, अश्पृश्यता निवारण आदि के माध्यम से न केवल देश की आजादी बल्कि समाज की विभिन्न बुराईयों से आजादी पाने हेतु भी लड़ते रहे। बंगोली में आपने साहूकारों के ब्याज के षड्यंत्र को विफल करने के लिए सामूहिक अनाज कोटी की स्थापना की थी जिससे वहाँ के लोग बिना ब्याज के आपसी धन व अनाज का व्यवहार करते थे। आपने शारीरिक व बौद्धिक विकास के उद्देश्य से एक आश्रम कि कल्पना को मूर्तरूप देने के लिए 25 अप्रैल 1940 को शिलान्यास किया और इसका साकार रूप सन 1976 में बनकर तैयार हुआ जिसका उद्घाटन पं. रविशंकर शुक्ल जी के हाथों से हुआ। आश्रम परिसर में एक सुविधा सम्पन्न अस्पताल व एक पुस्तकालय की स्थापना भी की गई।

निःस्वार्थ त्यागी

त्याग व तपस्या कि मूर्ति यति यतनलाल जी कि कर्मठता यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होती है, स्वतन्त्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के बल पर देश को अंग्रेजी हुकुमत से आज़ाद करवाने वाले यति जी ने अपने लिए कभी कोई लालसा नहीं कि, यही कारण है कि सन 1952 में रायपुर व सन 1957 में राजनांदगाँव लोकसभा से दी गई काँग्रेस की सीट को भी उन्होंने विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया, उनकी सकारात्मक छवि का इससे बड़ा उदाहरण और क्या होगा कि राजनीति में विपक्ष के लोग भी आपका आदर करते थे और कहते थे कि यदि आप राजनीति में आना चाहें तो हम आपको निर्विरोध जीताएंगे।

साहित्य सृजन तथा जनसंचार के माध्यम से जागरूकता

विद्वान, ओजस्वी वक्ता, अध्यात्म के प्रति समर्पित यति जी साहित्य में ना सिर्फ रुचि रखते थे बल्कि लेखन का कार्य भी करते थे। यति जी ने श्रीमद आनंद धन प्रथम भाग का गुजरती भाषा से हिन्दी में अनुवाद किया है। साथ ही वे स्वयं जागरूकता से ओतप्रोत गीतों कि रचना करते और गाँव-गाँव जाकर ढ़ोलक बजाते हुये उसे लोगों के बीच सुनाते थे। मानव जीवन की निस्पृह सेवा एवं अलौकिक व्यक्तित्व के धनी शांत, स्वभाव, कर्मठ व सादगी से भरे हुए यति जी के व्यक्तित्व ने महासमुंद शहर तथा वहां की जनता को गहराई से प्रभावित किया है। जिनके चमत्कारिक प्रभाव से मरणासन्न पीलिया के मरीज भी स्वस्थ हो जाया करते थे। ऐसे महापुरुष का निधन मुंबई के एक अस्पताल में कैंसर से जुझते हुए 4 अगस्त को हो गया।

उनके निर्वाण पश्चात उनकी स्मृति में यति-यतनलाल जैन अस्पताल के उद्धाटन अवसर पर मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. श्यामचरण शुक्ल ने कहा था कि “यति जी का दर्शन करना किसी पावन तीर्थ के समान पुण्यकारक है”।

छत्तीसगढ़ की सरकार ने भी श्रद्धेय यति जी की स्मृति में अहिंसा एवं गौ रक्षा, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक तथा सामाजिक समरसता, धर्मशाला, अस्पताल के क्षेत्र में किए गए अविस्मरणीय काम, अभिनव प्रयास और राष्ट्रीय कीर्तिमान विकसित करने के लिए यति यतनलाल पुरस्कार और सम्मान स्थापित किया है।

रायपुर में वानर सेना का बाल आंदोलन

“वानर सेना” रायपुर में छोटे बच्चों का एक संगठन था, जिसके सैनिक प्रमुख स्कूली बच्चे थे और रायपुर नगर में इस सेना का प्रमुख केंद्र था - ब्राह्मण पारा, इस वानर सेना के संस्थापक थे बलीराम दुबे “आजाद” जिनकी उम्र उस समय मात्र 14 वर्ष थी, यति-यतनलाल इस सेना के संचालक थे, इस सेना का प्रमुख कार्य था आंदोलन से संबन्धित पोस्टर एवं पर्चों का वितरण करना, अग्रणी नेताओं के संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना, एकत्रित होकर शहर भ्रमण करना छोटी सभाएं करना आदि। वानर सेना की इस टुकड़ी ने उम्र के दृष्टिकोण से छोटी होने के बावजूद छत्तीसगढ़ में आजादी की लड़ाई में अपनी बड़ी भूमिका निभाई थी, इस प्रकार कहा जा सकता है कि यति यतनलाल जी ने देश सेवा के लिए जनसंचार के अलग-अलग तरीकों का प्रयोग कर देश के स्वाधीनता संग्राम में अपना अमूल्य योगदान दिया।

साहित्यिक संकलन एवं विश्लेषण

यति जी पर आधारित साहित्य की पड़ताल करने पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर पर पूरी तरह समर्पित साहित्य का अभाव मिलता है, जबकि कुछ गिनती के साहित्यों में उनके बारे में संक्षिप्त वर्णन किया गया है, छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ पत्रकार एवं संपादक श्री जयशंकर प्रसाद शर्मा "नीरव" जी से किए साक्षात्कार में पता चला कि उन्होंने यति जी पर एक पूरी किताब लगभग 30 वर्ष पहले लिखी थी जो की कुछ ही प्रतियों में शेष है, पर किन्हीं कारणों से वह समय पर उपलब्ध नहीं थी हालाँकि उन्होंने वह किताब उपलब्ध कराने का आश्वाशन दिया है। इनके अलावा शहर के विभिन्न साहित्य स्त्रोतों से जो कुछ मिला वह इस शोधपत्र में शामिल किया गयाहै । श्री सुधीर सक्सेना जी द्वारा लिखित पुस्तक "छत्तीसगढ़ में गांधी" में भी यति जी के जीवन का एक प्रसंग उल्लेखित है जो कुछ इस प्रकार है :

“गांधी जी छत्तीसगढ़ बहुत ज्यादा बार नहीं आए. मध्यप्रदेश कुल दस दफ़ा और उसमें भी छत्तीसगढ़ में फ़कत दो बार, लेकिन उनकी छत्तीसगढ़ की केवल दो यात्राओं ने छत्तीसगढ़ की फ़िज़ा बदल दी। उन्होंने यंत्रचालित निरुपाय भीड़ को स्वातंत्रयचेत्ता संकल्पबद्ध समूहों में बदल दिया.महात्मा गांधी पहले-पहल सन् 1920 में इस अंचल में आये थे...महात्मा गांधी दूसरी बार सन् 1933 में छत्तीसगढ़ आए तब तक वे वर्धा में सेवाग्राम में अपना स्थायी आश्रम बना चुके थे सेवाग्राम से वे एक सप्ताह की यात्रा पर निकले थे बापू के छत्तीसगढ़ प्रवास का यह सप्ताह छत्तीसगढ़ के लिए महान विचारों की अग्नि में तपने का पावन सप्ताह था । पं. रविशंकर शुक्ल इस पूरे प्रवास में उनके साथ रहे । रायपुर में वे उन्हीं के आवास पर ठहरे । मीरा बेन, ठक्कर बापा, महादेव देसाई और शुश्री बजाज उनके साथ थे । स्वयंसेवकों में उनके संग थे प्रभुलाल लखौटीया, नंदकुमार दानी, नारायणराव अम्बिलकर, सीताराम खंडेलवाल, भगवतीचरण शुक्ल और अम्बिकाचरण शुक्ल । बापू के रायपुर आने पर उनकी आगवानी में यति यतनलाल ने अधोलिखित मंगलाचरण गाया था :

पधारो हे शबरी के राम , हमारा सविनय तुम्हें प्रणाम
हे अखंड सेवाव्रतधारी , हरिजन बंधु अकाम
नव जीवन कि ज्योति जगाते , आए जग अभिराम
नाथ सकल साधन विरहित हैं , हम सब निपट सकाम
जन-चातक कि आस तुम्हीं हो , महमोहन घनश्याम
कृत मंजु मेखला , कोशल भूमि ललाम
चल कर शुभ चरण चिन्ह पर अमर करे निज नाम
यह अतीत दंडक वन प्यारा , योग सिद्धि का धाम
सफल करे तब दिन साधन का , मंगलमय शुभ काम
चुका न सकते देव , तुम्हारे जन सेवा का दाम
ग्रहण करो हे पूज्य अतिथि , यह त्याग सुधा का जाम

(दि. 1 जुलाई 1997 को दैनिक देशबंधु में प्रकाशीत एक लेख में श्री केयूर भूषण जी ने इस कविता के रचनकर के रूप में मधावप्रसाद तिवारी (ग्राम-पंवता) का नामोल्लेख किया है)

तमोरा सत्याग्रह

बताया जाता है कि जंगल कानून को अमल में लाते हुए अंग्रेजों ने तमोरा और आसपास के गांव के अधिकांश मवेशियों को पकड़ लिया था, इतना ही नहीं मवेशी मालिकों के खिलाफ जंगल कानून तोड़ने का आरोप भी लगा दिया गया। आदिवासियों को जंगल कानून के नाम पर प्रताड़ित किया जाने लगा था। अंग्रेजों के इस सख्त रवैए के खिलाफ सत्याग्रहियों ने अंग्रेज अफसरों से पशुओं को छोड़ने का आग्रह किया और जब वे नहीं माने तो वनवासियों ने अंग्रेजों के खिलाफ शंखनाद का संकल्प ले लिया। अपने आंदोलन की जानकारी उन्होंने छत्तीसगढ़ के लिए स्वतंत्रता आंदोलन की कार्यवाही देख रहे प्रख्यात सेनानी यति यतनलाल और शंकर गनौदवाले के माध्यम से पं रविशंकर शुक्ल को दी, दोनों नेताओं ने वनांचल के गांवों का भ्रमण कर आंदोलन की तैयारियों का जायजा लिया। 6 सितंबर 1930 को लभरागांव में जंगल कानून तोडने का आखिरी प्रस्ताव पारित किया गया। 8 सितंबर को प्रस्ताव पर अमल करते हुए तमोरा गांव में जंगल सत्याग्रहियों का सैलाब उमड़ पड़ा। इस आंदोलन का दमन करने के लिए अंग्रेज अफसरों ने घेराबंदी की थी लेकिन उसे तोड़कर जंगल कानून को आदिवासियों ने नष्ट कर दिया। कानून की धज्जियां उड़ते देख तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर ने सभी को जेल का रास्ता दिखाना चाहा लेकिन तमोरा की युवती दयाबती ने डिप्टी कमिश्नर के गाल पर तमाचा जड़कर सभी को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त करा लिया और दयाबती के इसी शौर्यगाथा को सुनकर गांधी जी ने जंगल सत्याग्रह को अपना समर्थन दिया और पूरे देश में इस कानून के खिलाफ लड़ाई शुरू हो गई।

यति यतनलाल सम्मान के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित

"राज्य शासन की ओर से अहिंसा एवं गौ रक्षा, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक तथा सामाजिक समरसता, धर्मशाला, अस्पताल के क्षेत्र में किए गए अविस्मरणीय काम, अभिनव प्रयास और राष्ट्रीय कीर्तिमान विकसित करने के लिए यति यतनलाल, पं. रविशंकर शुक्ल, महाराजा अग्रसेन सम्मान की स्थापना की गई है। पुरस्कार प्राप्त करने राज्य के एक व्यक्ति या संस्था के चयन के लिए 5 अक्टूबर तक प्रविष्टियां आमंत्रित की गई है। चयनित व्यक्ति या संस्था को दो लाख रुपए, प्रतिक चिन्ह और प्रमाण पत्र दिया जाता है। सम्मान निर्णायक मंडल की ओर से चयन होने पर ही दिया जाएगा।"

निष्कर्ष

उक्त साहित्यिक प्रमाणों तथा विशेषज्ञों से प्राप्त जानकारियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यति यतनलाल जी निःसंदेह एक कर्मठ देशसेवक, निष्काम कर्मयोगी तथा छत्तीसगढ़ में शांति के पर्याय थे । इसके बावजूद भी उन्होंने अपने विशेष कौशल व देशप्रेम की भावना के बल पर अनेक प्रकार से भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में अपना अमूल्य योगदान दिया जिसके लिए छत्तीसगढ़ की धरा उनकी सदैव ऋणी रहेगी । चाहे वानर सेना के सञ्चालन के माध्यम से संदेशों का आदान प्रदान हो या फिर स्वाधीनता के प्रति जागृत करने वाले प्रेरनादायी गीतों का गाँव-गाँव में प्रचार प्रसार हो यह प्रमाण सिद्ध करते हैं की उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व देश की आजादी की लड़ाई में अबुत्पूर्व रहेगा ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा,अशोक. “सिरपुर महोत्सव”. “धरोहर”. पृ. 23-24, सिरपुर महोत्सव आयोजन समिति
2. पुस्तिका – श्री यतन मगन जैन मण्डल , महासमुंद
3. बेहार, डॉ.रामकुमार, बेहार, श्रीमती निर्मला, “छत्तीसगढ़ के गौरव रत्न”. छत्तीसगढ़ शोध संस्थान
4. सक्सेना, सुधीर, “छत्तीसगढ़ में गांधी”. “शताक्षी प्रकाशन”
5. झा, विभाष कुमार, नैयर, डॉ. सौम्या, “छत्तीसगढ़ समग्र”. “छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी”
6. पत्रिका : “छत्तीसगढ़ वृहत संदर्भ”.”रायपुर में वानर सेना का बाल आंदोलन”
7. समाचार पत्र : भास्कर न्यूज़ नेटवर्क : “यति यतनलाल सम्मान के लिए प्रविष्ठियां आमंत्रित”. Oct 02, 2015
8. गजेंद्र, नीरज. “तमोरा सत्याग्रह”
9. अन्य इंटरनेट आलेख